वार्तालाप नं.464, पोखरा, नेपाल, दिनांक 14.12.07
Disc.CD No.464, dated 14.12.07 at Pokhra, Nepal

समयः 00.45-03.30

जिज्ञासुः बाबा आप तो सर्वशक्तिवान हैं ना बाबा।

बाबा: आप तो सर्वशक्तिवान है बाबा तो? बाबा सर्वशक्तिवान है। आप किसे कह रहे हैं?

जिज्ञासु: आपको।

बाबा: नहीं हम कहाँ से सर्वशक्तिवान है? हमे ठंडी लग रही है। सर्वशक्तिवान कहाँ है?

Time: 00.45-03.30
Student: Baba, you are Almighty *(sarvashaktivan)*, aren't you?
Baba: Baba, you are Almighty? Baba is Almighty. To whom are you saying 'you'?
Student: I am telling you.
Baba: No, how am I Almighty? I am feeling cold. How am I Almighty?

जिज्ञासु: आप हमारी बनी-बनाई ड्रामा में कुछ परिवर्तन कर देना ये हमारी इच्छा है।

बाबा: बनी बनाई ड्रामा में परिवर्तन करने के लिये ही तो बाबा आया हुआ है। ज्ञान सुना रहा है। आपको ज्ञान मिल रहा है ना? किस लिये मिल रहा है? आपकी जो बिग़डी हुई है, अभी जो बिगड़ी हुई बात है इस दुनिया में दु:ख मिल रहा है वो सुधर जाए । तो अगर सुधर जायेगी, सुधर जायेगी तो सर्वशक्तिवान के ज्ञान ने ही सुधारी ना या किसी दुसरे ने सुधारी?

जिज्ञासु: ड्रामा में नून्ध था।

बाबा: क्या नून्ध था? क्या आपको मालूम है? पिछले जन्म में आपके ड्रामा में क्या नून्ध था....

जिज्ञासु: .....मेरे ड्रामा में ये नून्ध था । ज्ञान के आधार से मैं ये बता सकता हूँ कि....
Student: I wish that you make some change in my pre-determined drama.
Baba: Baba has come only to make changes in the pre-determined drama. He is narrating the knowledge. You are receiving the knowledge, aren't you? Why are you receiving it? [So that] whatever is not good in your life, whatever is not good at present…; you are receiving sorrow in this world ... that should improve. So, if it improves, then, only the knowledge of the Almighty improved it or did anyone else improve it?
Student: It was fixed in the drama.
Baba: Do you know what was fixed? What was fixed in your drama in the past birth.....
Student: .....this was fixed in my drama. I can tell this on the basis of knowledge that....

बाबा: बाबा ने कहा कि आप अच्छे संकल्प करो। ब्रहमा के संकल्पों से सृष्टि रची गई; नई दुनिया रची गई ना? तो आप भी अच्छे से अच्छे, नए से नए, बढिया से बढिया संकल्प करो तो आपकी भी दुनिया कैसी बन जायेगी? जन्म-जन्मांतर की अच्छी दुनिया बन जायेगी।

जिज्ञासु: ..... यदि आप ड्रामा के आधीन में है तो....

बाबा: कर दिया ना। बाप आते हैं, ज्ञान सुनाते हैं ज्ञान सुना के बता दिया तुम ऐसा पुरुषार्थ

करोगे तो ऐसे बनोगे। पुरुषार्थ नहीं करोगे तो नहीं बनोगे। तो अपना आत्मा का कल्याण, अपना आत्मा जो है अपने लिये शत्रु और मित्र खुद है या कोई दूसरा है?

Baba: Baba has said, create good thoughts. The world was created through Brahma's thoughts; a new world was created, wasn't it? So, you too create the best, the newest, the best thoughts; then how will your world also become? It will become a good world for many births.

Student: ......if you are bound by the drama...

Baba: It has been done, hasn't it? The Father comes, He narrates knowledge; as part of the knowledge He said, if you do purusharth (special effort for the soul) in this way, you will become like this. If you do not make special effort for the soul, you will not become. So, benefit of your own soul…; is your soul an enemy or a friend for itself or is there anyone else?

जिज्ञासु: ..... ड्रामा के आधीन में बाप भी है।

बाबा: बाप ड्रामा के आधीन में इसलिये है कि वो आकरके सिर्फ ज्ञान सुना सकता है। आप का पुरुषार्थ नहीं कर सकता। ज्ञान सुना करके। आपको अपने आप चेंज करना है। ये ज्ञान सिवाय परमपिता परमात्मा के और कोई नहीं सुना सकता है। इसलिये परमात्मा बाप सर्वशक्तिवान कहा जाता है।

जिज्ञासु: बाप भी ड्रामा के आधीन में हैं।

बाबा: बाप ड्रामा के आधीन में इसलिये हैं कि उसे एक्युरेट टाईम पर आना है। वो कलियुग में नहीं आ सकता, द्वापर में नहीं आ सकता, सतयुग में नहीं आ सकता, त्रेता में नहीं आ सकता। उसका ड्रामा में पार्ट नून्धा हुआ है ।जब ये सृष्टि रूपी मकान पुराना होगा, जब इस सृष्टि में सब दु:खी अनुभव करे तन से, मन से, धन से तब मेरे को आना है और ये तो ठीक बात है।

Student: ..... the Father is also bound by the drama?

Baba: The Father is bound by the drama because He can **only** narrate knowledge when He comes. He cannot do *purusharth* for you. He narrates the knowledge; you have to change it yourself. Nobody except the Supreme Father Supreme Soul can narrate this knowledge. This is why the Supreme Soul Father is called Almighty.

Student: The Father is also bound by the drama?

Baba: The Father is bound by the drama because He has to come at an accurate time. He cannot come in the Iron Age; He cannot come in the Copper Age; He cannot come in the Golden Age, He cannot come in the Silver Age. His part is fixed in the drama. When this house-like world becomes old, when everyone starts experiencing sorrow in this world through the body, through the mind, through the wealth, then 'I have to come'; and it is indeed correct.

समय: 03.31-04.30

जिज्ञासु: आप राम की आत्मा है ना। आप राम की आत्मा है। कोई लक्ष्मण होगा।

बाबा: नहीं, हम तो राम की आत्मा नहीं है। हमे तो नहीं पता लग रहा कि हम राम की आत्मा हैं, कृष्ण की आत्मा हैं, कौनसी आत्मा हैं। हाँ, हर आत्मा पुरुषार्थी है जानने का।

जिज्ञासु: कोई लक्ष्मण का होगा।

बाबा: कोई लक्ष्मण का होगा।

जिज्ञासु: कोई रावण का भी होगा।

बाबा: हाँ रावण का, एक थोडे ही है रावण के तो 10 सिर है।

Time: 03.31-04.30

Student: You are the soul of Ram, aren't you? You are the soul of Ram. Someone must be Lakshman.

Baba; No, I am not the soul of Ram. I am unable to know whether I am the soul of Ram or the soul of Krishna, or which soul I am. Yes, every soul is a maker of special effort for the soul *(purusharthi)* to know.

Student: There must be someone playing the part of Lakshman.

Baba: There must be someone playing the part of Lakshman

Student: There must be someone playing the role of Ravan, too.

Baba: Yes, there is not one [person playing] Ravan's part but Ravan has ten heads.

जिज्ञासु: मैं किसकी आत्मा हूँ?

बाबा: जो जिसका पार्ट बजाने वाली आत्मा होगी उसको अपने आप अपने पार्ट का पता चलेगा। कोई दूसरे को पता नहीं चलेगा। अपने अन्दर के संकल्पों की बात अपने अन्दर के वायब्रेशन की बात हम ज्यादा समझेंगे, कोई दूसरा ज्यादा समझेगा? कौन समझेगा? तो अपनेआप अपने पार्ट की प्रत्यक्षता होगी। कोई दूसरा हमारा पार्ट क्लीयर नहीं कर सकता या भगवान बाप आ करके 500 करोड का पार्ट क्लीयर करे ये नहीं हो सकता।

Student: Which soul am I?

Baba: Whichever part a soul has to play; it will come to know of its part automatically. No other person will come to know of it. Will **we** understand our own thoughts, our internal vibrations more, or will anyone else understand it more? Who will understand? So, our part will be revealed automatically. No one else can make our part clear (i.e. reveal it) and it cannot be possible that God the Father comes and clarifies the part of all the 500 crore (5 billion) (souls).

समयः 04.31-05.45

जिज्ञासुः आप, शिवबाबा को गोद में लेके खेल सकते हैं जैसे गुडिया है। जो शिवबाबा का रोल है ना, सर्वसाधारण तन में आते हैं। जो बात बोलते हैं ना, जो गुण हमें दिखाई देते हैं, ऐसा लगता है कि शिवबाबा है या शिवबाबा का हम समझे थे बहुत बड़ा है या गोद में लेके खेलें जैसे गुडिया है। ये बात मुझे बहुत संशय में डाला है।

Time: 04.31-05.45

Student: You can take Shivbaba in your lap and play with Him like a doll. Shivbaba's role is that He comes in an ordinary body, does He not? Whatever He speaks…., doesn't He? Whatever virtues are visible to us, it appears as if it is Shivbaba or I had thought that Shivbaba is very big or that I can take Him in my lap and play like a doll. This point has put me in a lot of confusion.

बाबा: ये तो अपनी भावना के उपर है। अव्यक्त वाणी में बोला है- तुमको ऐसा खिलौना मिला है जो न कब टूटेगा न फूटेगा और न कोई उसके लिये पैसा देना पडेगा। मुफ्त का खिलौना मिला है जिसको जिस रूप में जब चाहो तब अनुभव कर सकते हो। क्या? भाई के रूप में अनुभव करना चहो भाई के रूप में अनुभव कर सकते हो। बच्चे के रूप में अनुभव करना चाहो बच्चे के रूप में अनुभव कर सकते हो। बाप के रूप में अनुभव करना चाहो बाप के रूप में अनुभव कर सकते हो। टीचर के रूप में अनुभव करना चाहो टीचर के रूप में अनुभव कर सकते हो। ये तुम्हारे उपर है।

Baba: This depends on our feelings. It has been said in an *Avyakta Vani*: you have not found such a toy which will never break nor will you have to pay for it. You have found a toy, free of cost, whom you can experience in whichever form and at whatever time you want. What? If you wish to experience Him in the form of a brother, you can experience Him in the form of a brother. If you wish to experience Him in the form of a child, you can experience Him in the form of a child. If you wish to experience Him in the form of a father, you can experience Him in the form of a father. If you want to experience Him in the form of a teacher, you can experience in the form of a teacher. It depends on you.

समयः 20.05-21.21

जिज्ञासुः बाबा, जब संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण बैठेंगे गद्दी पे....

बाबा: गद्दी पे बैठते हैं? चित्र में कहीं संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण को गद्दी पे बैठे हुए दिखाया गया है?

जिज्ञासु: राम दरबार में बैठ गये ना राम-सीता।

बाबा: राम-सीता, वो तो त्रेता युग की बात है।

जिज्ञासु: जब उनको गद्दी मिलेगा.....

बाबा: वो त्रेता में मिलती है गद्दी।

जिज्ञासु: नहीं संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण तो आयेंगे न?

बाबा: संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण गद्दी नहीं लेते हैं। जैसे बाप है तो बाप का बच्चा भी वैसा ही होता है। बाप कैसा है? ओबिडियेंट सर्वेंट बन के ही आया है सारी सृष्टि का। तो बाप का बच्चा भी जो असली होगा वो कैसा रहेगा? अंत तक सर्वेंट बनके रहेगा। लेकिन दुनिया उसको भले महाराजा माने। जैसे महाभारत में दुर्योधन को नहीं चाहते थे कि ये युवराज और राजा बने लेकिन युधिष्ठिर को? युधिष्ठिर को सभी चाहते थे लेकिन युधिष्ठिर का सेवा भाव था और दुर्योधन का सेवा भाव नहीं था। ऐसे ही है।

Time: 20.05-21.21

Student: Baba, when the Confluence Age Lakshmi & Narayan sit on the throne.....

Baba: Do they sit on the throne? Have the Confluence Age Lakshmi & Narayan been shown anywhere in the picture sitting on the throne?

Student: Ram and Sita sat (on the throne) in the Court of Ram, didn't they?

Baba: As regards Ram and Sita, that is about the Silver Age.

Student: When they ascend the throne……..

Baba: They ascend the throne in the Silver Age.
Student: No, the Confluence Age Lakshmi and Narayan will come, will they not?
Baba: The Confluence Age Lakshmi and Narayan do not ascend the throne. The Father's child is also like the Father. How is the Father? He has certainly come as an obedient servant of the entire world. So, how will the true son of the Father be as well? He will remain as a servant till the end although the world may consider him to be a *Maharaja* (a great king). For example, people did not like *Duryodhan* in the epic Mahabharata to be the Crown Prince and King; but what (did they use to think) about *Yudhishthir*? Everyone used to like *Yudhishthir* (to become the king). *Yudhishtir* had a feeling of servitude (*seva bhaav*). And *Duryodhan* did not have a feeling of servitude. It is a similar case.

जिज्ञासु: नहीं जो सारी जो इतने करोड़ की जो दुनिया है जब ये प्रत्यक्ष होंगे तो, आदि देव और आदि देवी, तो क्या उस समय सारी दुनिया एक बार जरूर देखेगी?
बाबा: सारी दुनिया एडम-ईव को मानेगी।
जिज्ञासु: मानेगी?
बाबा: मानेगी और दिल से मानेगी।
जिज्ञासु: देख नहीं पायेगी?
बाबा: भले देख न पाये। गांधीजी को तुमने नहीं देखा तो क्या गांधीजी तुम्हारे दिल में नहीं बसे हुए हैं? **जिज्ञासु**: हाँ।
बाबा: फिर?
जिज्ञासु: तो दिल में बैठेंगे?
बाबा: हाँजी।
Student: No, the world consists of so many crores (billions of people); when they are revealed, the *Aadi dev* (the first male deity) and *Aadi devi* (the first female deity) (are revealed), will the entire world definitely see them once?
Baba: The entire world will accept Adam and Eve.
Student: Will it accept?
Baba: It will accept and it will accept from its heart.
Student: Will it not be able to see?
Baba: It doesn't matter if they are not be able to see. You didn't see Gandhiji, so does Gandhiji not live in your heart?
Student: Yes.
Baba: Then?
Student: Then will they sit in the heart?
Baba: Yes.

समयः 23.00 – 27.26

जिज्ञासुः बाबा, आत्मा और प्राण एक ही है.....या दोनों अलग-अलग चीज़ है बाबा?
बाबा: जब आत्मा निकल जाती है तो श्वास का आना-जाना बन्द हो जाता है। इसका मतलब ये हुआ कि आत्मा भी एक शक्ति है। अन्दर है शरीर में तो शरीर कार्य करेगा। बाहर हो गई, शरीर निर्जीव हो जाता है।

जिज्ञासु: वनस्पति में भी आत्मा है?

बाबा: वो भी, उसमें भी आत्मा है लेकिन जड़त्वमई आत्मा। क्या? वनस्पति एक स्थान पर जहाँ उगेगी बस वहीं पे लहराती रहेगी। उससे अलग हो करके कार्य नहीं करेगी।

Time: 23.00-27.26

Student: Baba, is the soul (*atma*) and the life-force (*pran*) one and the same.....or are both of them different things Baba?

Baba: When the soul departs (from the body), the process of inhalation and exhalation stops. It means that the soul is also a power. If it is present in the body, the body will work. As soon as it goes out, the body becomes lifeless.

Student: Is there a soul in the plants too?

Baba: There is a soul in it as well, but it is inert (*jaratwamayi*). What? Plants will keep waving at the same place where they grow. They will not function separately (from the place where they are fixed).

जिज्ञासु: बाबा जो अंतर्मन है ना वो चेतन-अचेतन मन है। अचेतन मन जो हमारा ध्यान अवस्था में रहते हैं .....

बाबा: सुषुप्तावस्था में अचेतन मन काम करता है।

जिज्ञासु: ....अचेतन मन सुप्रीम सोल से जुड़ा हुआ है?

बाबा: अचेतन सुप्रीम सोल से जुड़ा हुआ हो, हमेशा जुड़ा हुआ हो तो उसे आने की दरकार क्या है? वो आता ही इसलिये है कि वो हमारे मन को अपनी बुद्धि से जोड़ना चहता है। जो आने वाला है, जो भगवान है वो मन वाला है या अमन है?

जिज्ञासु: बाहर से जो देखने वाला कैसा भी हो, अंदर से तो....

Student: Baba, the inner mind (*antarman*) which is there, isn't it? It is a conscious-subconscious mind (*chetan-achetan man*). When we are in a stage of meditation, the sub-conscious mind.....

Baba: The sub-conscious mind works in the stage of sleep (*sushuptavastha*).

Student:...is the sub-conscious mind connected with the Supreme Soul.

Baba: If the sub-conscious mind is connected, always connected with the Supreme Soul then where is the need for Him to come? He comes only because He wants to connect our mind with His intellect. Does the one who comes , does God have a mind (*man*) or is He without a mind (*aman*)?

Student: The one who is visible outside may be of whatever kind, (but) from within....

बाबा: बाहर से... उसका मन चलता है? ब्रह्मा का मन चलता है? जिसमें प्रवेश करता है उसका मन चलता है या भगवान का मन चलायमान है?

जिज्ञासु: ब्रह्मा का मन चलायमान है।

बाबा: ब्रह्मा का मन चलता है शरीरधारी का मन चलता है। जिसको शरीर ही नहीं है उसका मन अमन है। उसे मन चलाने की दरकार है ही नहीं। सोचने-विचारने की दरकार है ही नहीं। वो तो असोचता है। उसे संकल्प-विकल्प करने की दरकार ही नहीं। वो तो जानता है, त्रिकालदर्शी है, पहले से ही । उसे सोचने-विचारने की क्या दरकार? वो आता ही है हमको

अमन बनाने के लिये। हम मन के ऊपर पूरा कंट्रोल कर लें, मन बिल्कुल हिल न सके तब आप समान बनाके हमको ले जायेगा।

Baba: From outside…..Does His mind work? Does Brahma's mind work? Does the mind of the one in whom He enters work or is God's mind inconstant (*chalayman*)?
Student: Brahma's mind is inconstant.
Baba: Brahma's mind works. The bodily being's mind works. The one who does not have a body at all His mind is in a state of being without mind. There is no need for Him to use His mind at all. There is no need for Him to think at all. He is thoughtless (*asochta*). There is no need for Him to create good or bad thoughts at all. He knows (everything); He is *Trikaldarshi* (i.e. the one who knows the past, present and future); He is present since the beginning. Where is the need for Him to think? He comes only to make us *aman* (one without a mind). We should gain full control over the mind; the mind should not shake at all. Then He will make us equal to Himself and take us along with Him.

जिज्ञासु: अचेतन मन बहुत शक्तिशाली रहते हैं , बहुत शक्तिशाली होने के नाते से ये सर्वशक्तिवान का स्वरूप होगा?

बाबा: वो कुछ नहीं वो तो आत्मा सो परमात्मा वालों की थ्यारी है। वो आत्मा सो परमात्मा जो समझते हैं उनकी थ्यारी है। लेकिन ऐसा है नहीं।

जिज्ञासु: अचेतन मन और शिव बाबा में कोई सम्बन्ध नहीं?

बाबा: सम्बन्ध है। वो आकरके मन को अमन बनाता है तो सम्बन्ध हुआ ना?

जिज्ञासु: अमन बनाने के नाते से ही सम्बन्ध है बाकि और कोई...?

बाबा: ये कोई कम बात है क्या? मन को अमन बनाना; मन के आधार पर तो इन्द्रियाँ सुख-दुःख भोगती है। क्या? जैसे इंद्रियाँ आँख हैं। लवर्स होते हैं। मजनू-लैला है। एक दूसरे को याद करते हैं। मजनू के सामने से आदमी गुजरते चले जाते हैं, कारवाँ गुजर जाता है उसे अपनी लैला याद रहती है। वो कारवाँ को नहीं देखता। आँखे तो खुले थी। क्यों नहीं देखा? क्योंकि जो मन है वो देख रहा था? तो मन की आँखें अगर बन्द हैं तो ये आँखे काम नहीं करती। ये इन्द्रियाँ भी अपना सुख-दुःख नहीं ले सकती। मन जब इन्द्रियों के साथ जुडेगा तो इंद्रियाँ अपना सुख-दुःख भोग सकेगी। तो मन ही मुख्य है।

Student: The sub-conscious mind is very powerful. In relation to being very powerful, will it be the form of the Almighty?
Baba: That is not true. That is a theory of those who believe that a soul is equal to the Supreme Soul. It is a theory of those who think that a soul is equal to the Supreme Soul. But it is not so.
Student: Is there no link between the sub-conscious mind and Shivbaba?
Baba: There is a relationship. He comes and makes the mind *aman* without mind; so there is a relationship, isn't there?
Student: Is there only a relationship of making it *aman* or is there anything else….?
Baba: Is it any less? Making the mind *aman*; the organs experience happiness and sorrow only on the basis of the mind. What? For example, there are eyes as the organs. There are lovers. There is *Majnu* and *Laila* (famous lovers). They remember each other. People keep passing-by in front of *Majnu*; the caravan passes-by him, (but) he remembers his *Laila*; he

does not see the caravan. The eyes were open; why did he not see (the caravan)? It is because, was the mind seeing? So, if the eyes of the mind are closed, then these (physical) eyes do not work. These organs cannot experience their happiness and sorrow either. When the mind is connected with the organs, the organs will be able to experience their happiness and sorrow. So, the mind alone is important.

जिज्ञासु: ये सुख-दुःख तो मान्यता है ना बाबा?

बाबा: मन ही भोगता है। मान्यता; मान्यता तब कहिये जब मन को अमन बना ले। जब मन को अमन बनाया नहीं है तो मान्यता क्यों है? वो तो सच्चाई है।

जिज्ञासु: मानने से दुःख-सुख होता है ना बाबा।

बाबा: अच्छा, तो हम थप्पड़ मार रहे हैं अभी। तो दुःख होगा या नहीं होगा? मैं, मैं, मैं,.....तो मन है ना?

Student: Baba, this happiness and sorrow is a belief, isn't it?

Baba: The mind itself experiences. Belief; we can call it belief only when we transform the mind into *aman*. When we haven't made the mind *aman*, then why is it a belief? It is a reality.

Student: Baba, there is sorrow and joy only when we believe so, isn't it?

Baba: OK, I am going to slap you now. Will you feel the pain or not? (The student said something) Me, me, me.....so, the mind is there, isn't it?

समयः 27.30-28. 16

जिज्ञासुः बाबा, ये ओशो गुरू है ना। इनका आने का दरकार क्यों है?

बाबा: ये जो बडे-बडे इब्राहिम, बुद्ध, क्राईस्ट, गुरुनानक - ये क्यों आये? ये तो माया के रूप हैं। भगवान है तो भगवान के विरोध में फिर मायावी रूप भी होना चाहिये। नहीं तो ड्रामाबाजी कैसे होगी? ये दुनिया क्या है? ड्रामा है ना? नाटक खेलने के लिये सृष्टि पे इनका आना भी जरूरी है। कोई ड्रामा हो, नाटक हो, और उसमें विलियन (villain) हो ही नहीं विरोधी पार्ट बजाने वाला तो मजा आयेगा ड्रामा देखने में? मजा ही नहीं आयेगा।

Time: 27.30-28.16

Student: Baba, there is a *Guru* Osho, isn't he? What is the need for him to come?

Baba: Why did these big personalities (like) Abraham, Buddha, Christ, Guru Nanak come? They are forms of *Maya*. When there is God, then there should also be *Mayavi* (illusive) forms in the opposition of God. Otherwise, how will the drama be enacted? What is this world? It is a drama, isn't it? Their arrival in this world is also necessary for the drama to be enacted. If there is a drama, and if there is no villain, if there's nobody playing the part of an opponent at all, then will there be any joy in seeing the drama? There will not be any pleasure at all.

समयः 34.02-37. 05

जिज्ञासुः बाबा, एक बात, सभी लोगों का जन्म 84 ही होता है?

बाबा: सभी का क्यों हो जायेगा 84 जन्म? नाली के कीड़े को उठा करके साफ-सुथरे जगह पर रख दो, वो साफ-सुथरी जगह में रहना चाहेगा या नाली में ही अपने को पसन्द करेगा?

जिज्ञासु: नाली में।

बाबा: नाली में ही पसन्द करेगा।

जिज्ञासु: साफ जगह में तो मर जायेंगे।

बाबा: हाँ मर जायेगा। ऐसे ही कलियुग के अंत में जन्म लेने वाली आत्मा को आप ये कहें कि हम सतयुग में ले जाके... ऐं, मजा नहीं आता, ये क्या सतयुग में कोई सुख होता है? हं? इन्द्रियों का कोई सुख ही नहीं होगा। ये सुख सुख नहीं है, हम नहीं चाहते है ऐसा। सन्यासी लोग कहेंगे हमें स्वर्ग के सुख कागविष्ठा समान हैं, हमें चाहिये नहीं। तो हरेक आत्मा का अपना-अपना स्वभाव-संस्कार है। अविनाशी स्वभाव-संस्कार है।

Time: 34.02-37.05

Student: Baba, (I wish to ask) one thing, do all the people take 84 births?

Baba: Why will everyone take 84 births? If you pick a worm from a drain and keep it at a clean place, would it like to live in a clean place or would it like to live in the drain?

Student: In the drain.

Baba: It would like to live in the drain only.

Student: It will die in a clean place.

Baba: Yes, it will die. Similarly, if you tell the souls taking birth at the end of the Iron Age , we will take you to the Golden Age…….(they will say) No, there is no pleasure there. What is this? Is there any pleasure in the Golden Age? Hum? There will not be any pleasure of the organs at all. This pleasure is not a pleasure. We don't desire such (pleasure). *Sanyasis* will say , for us the joys of heaven are like the excreta of the crow, we do not want it. So, every soul has its own nature and *sanskars*. Every soul has imperishable nature and *sanskars*.

जिज्ञासु: किसी से भी पूछो आपको मरते वक्त कहाँ जाना है? तो बोलेगा मुझे स्वर्ग में जाना है।

बाबा: अच्छा सन्यासियों से पूछो।

जिज्ञासु: वो तो दूसरे धर्म वाले हैं।

बाबा: तो दूसरे धर्म वाले ही कहेंगे ना? सन्यासी तो नहीं कहेंगे? तो इब्राहिम, बुद्ध, क्राईस्ट ये सब सन्यासी ही तो हैं।

Student: If you ask anyone at the time of his/her death where he/she wants to go, he will say , I wish to go to heaven.

Baba: OK, ask the *Sanyasis*.

Student: They belong to the other religions.

Baba: So, only those who belong to the other religions will say (they do not desire to go to heaven), will they not? *Sanyasis* will not say (that they want to go to heaven), will they? So, Abraham, Buddha, Christ, all of them are indeed *Sanyasis*, are they not?

जिज्ञासु: वो कहेंगे कि अधर्म मत करो।

बाबा: वो जिसको अधर्म समझते हैं, वो अपनी वाणी को धर्म समझते हैं। उसके अलावा जो दूसरी वाणी बोलेगा उसको अधर्म समझते हैं। अधर्म समझते हैं इसलिये तो ईश्वर का आके विरोध करते हैं।

जिज्ञासु: वो भी कहेंगे किसी को कष्ट मत दो, किसी को दुःख मत दो।

बाबा: दुःख किसे कहते हैं और सुख किसे कहते है उसकी परिभाषा ही उनको नहीं मालूम। वो समझते हैं इन्द्रियों का सुख देना ही सुख है। इब्राहिम क्या कहेगा? इन्द्रियों से परे का भी कोई सुख होता है? वो मानेगा?

Student: They will say, don't do *adharma* (unrighteousness).
Baba: Whatever they consider as *adharma* (unrighteousness); they consider their versions to be *dharma* (religion) and they think that whatever anyone except them says is *adharma*. They consider it to be *adharma,* this is why they come and oppose God.
Student: They will also say , don't give trouble to anyone. Don't give sorrow to anyone.
Baba: They do not know the very definition of what is sorrow and what is happiness at all. They feel that giving the pleasure of organs alone is happiness. What will Abraham say? Will he accept that there is something like joy beyond the organs? Will he accept?

जिज्ञासु: तो लोग क्यों फॉलो करते है उसे?

बाबा: किसको?

जिज्ञासु: बुद्ध को, इब्राहिम को, क्राईस्ट को क्यो फ़ॉलो करते है?

बाबा: कुत्ते ही कुत्ते को फॉलो करेंगे ना?

जिज्ञासु: लेकिन आपका तो सभी बच्चे है ?

बाबा: सभी बच्चे.....आपका?

जिज्ञासु: संसार के जितने भी लोग होंगे वो बाबा के ही बच्चे होंगे।

बाबा: हाँ, बाबा के बच्चे है लेकिन एक कैटेगिरी.... एक बाप के 10 बच्चे होते हैं। 10 अलग-अलग कैटेगिरी के होते हैं या एक ही कैटेगिरि के होते हैं?

Student: So, why do people follow him?
Baba: Whom?
Student: Why do people follow Buddha, Abraham, Christ?
Baba: Only the dogs will follow a dog, will they not?
Student: But everyone is your child.
Baba: All the children…….are **yours**?
Student: All the people of the world will be Baba's children only.
Baba: Yes, they are Baba's children, but as regards one category……..(suppose) a father has ten children. Are they of ten different categories or of the same category?

जिज्ञासु: पर भगवान जो बाप होता है वो चोर भी हो, डकैत भी हो सभी को प्यार तो उतना ही करता है।

बाबा: प्यार तो करता है लेकिन जो बादशाही देता है वो बड़े बच्चे को देता है या छोटे बच्चे को देता है?

जिज्ञासु: बादशाही तो देते हैं।

बाबा: तो क्यों देता है बड़े बच्चे को? जानते हैं ना कि ये ज्यादा प्योरिटी के पावर से पैदा हुआ है। लम्बे समय की प्योरिटी के पावर से पहला बच्चा पैदा हुआ है। तो वो ज्यादा हकदार बन जाता है ना? तो ऐसे ही बच्चे तो सब है लेकिन कोई बाप को पहचानते है, कोई नहीं पहचानते हैं। जो पहले बाप को पहचानते हैं वो पहला बच्चा हैं, जो पहचानता ही नहीं और विपरीत आचरण करता है वो बच्चा है? बाप के कंट्रोल में रहे वो बच्चा या बाप के कंट्रोल से हमेशा बाहर रहे वो बाप का बच्चा?

जिज्ञासु: बच्चा तो दोनों ही है पर जो कंट्रोल में है वो ही सच्चा बच्चा है।

बाबा: फिर कैटेगिरि अलग-अलग हो गई ना?

Student: But God who is the Father loves everyone equally, whether he (child) is a thief, (or) a dacoit (burglar).

Baba: He does love, but does He give the emperorship to the eldest son or to the younger son?

Student: He does give the emperorship (to the eldest son).

Baba: So, why does He give (the emperorship) to the eldest son? (Because) he knows that he is born through the power of greater purity. The first son is born by the power of long period of purity. So, he (the eldest son) becomes the one having more right (on the emperorship) , doesn't he? So, similarly, everyone is a child, but some recognize the Father, some do not recognize Him. The one who recognizes the Father first is the first son. Is the one who does not recognize Him at all and performs opposite actions, a child? Is a child who remains under the control of the father considered to be a child or is the child who always remains out of the father's control be considered to be the father's child?

Student: Both are children, but the one who remains under his control is the true child.

Baba: Thus the category is different, isn't it?

समयः 01.00-01.50

जिज्ञासुः ये गंगा का चित्र ठीक नहीं है, इसको करेक्ट करना मतलब क्या है?

बाबा: एक गंगा है - राम तेरी गंगा मैली। वो है पानी की गंगा और एक गंगा है जिसका सागर से कनेक्शन है। तो जो भी कचड़ा गिरता है वो कहाँ जाता है? सागर में जाता है। अगर सागर से कनेक्शन ही नहीं तो कचड़ा कहाँ का कहाँ रह जायेगा? नदी का नदी में ही रह जायेगा। तो नदी गन्दी बनेगी या पावन बनेगी? गन्दी बन जायेगी।

Time: 01.00-01.50

Student: This picture of Ganga is not correct, it has to be corrected, what does it mean ?

Baba: One Ganga is – *Ram teri Ganga maili* (Ram, your Ganga has become dirty). That is a Ganga (the river Ganges) of water and the other Ganga is the one which has connection with

the ocean. So, whatever garbage falls in it, where does it reach? It reaches the ocean. If there is no connection with the ocean at all then where will the garbage remain? It will remain in the river itself. So, will the river become dirty or will it become pure? It will become dirty.

समयः 02.10-02.40

जिज्ञासुः 50-60 साल ये पढ़ाई चलेगी। पढ़ाई पढ़ायेंगे।

बाबा: पढायेंगे। पढ़ाई कौन पढ़ाता है? पढ़ाई पढ़ाने वाला क्या कहा जाता है? टीचर। टीचर का पार्ट कब से शुरु होता है? 76 से। तो 76 से लेके कब तक? 36 तक ये टीचर का पार्ट है। जब तक जीना है तब तक? तब तक पीना है। तो 60 साल की पढ़ाई है।

Time: 02.10-02.40
Student: This study will continue for 50-60 years. The knowledge will be taught.
Baba: It will be taught. Who teaches the knowledge? What is the person who teaches called? A teacher. Since when does the part of a teacher begin? Since (19)76. So, since (19)76 till when? This part of the teacher is till (20)36. Until we are alive, what should we do? We have to drink (the nectar of knowledge). So, the study is for 60 years.

समयः 02.41-04.21

जिज्ञासुः पढ़ेंगे-लिखेंगे तो बनेंगे नवाब, खेलेंगे कूदेंगे तो होंगे खराब। हरेक आत्मा का....कुछ आत्माओं का पढ़ाई-लिखाई नहीं होता है। फिर भी वो तो याद तो करता है। फिर दास-दासी क्यों बनता है? कारण?

बाबा: पढ़ाई-लिखाई जो करता है तो पढ़ाई-लिखाई ज्यादा करेगा वो ऊँच पद पायेगा या कम पढ़ाई-लिखाई करेगा वो ऊँच पद पायेगा? कोई चपरासी भी बनते हैं। वो मुश्किल से आठवीं पास या हाई स्कूल पास कर पाते हैं। कोई आए. पी. एस, आए. ई. एस बनते हैं - बडे-बडे ऑफिसर। तो पढ़ाई ऊँची पढेंगे तभी तो।

Time: 02.41-04.21
Student: [There is a proverb], if you study well you will become a *Nawab* (a prince), if you keep playing you will spoil. Every soul...Some souls do not study but they do remember (ShivBaba). Then why do they become servants or maids *(das-dasi)*? What is the reason?
Baba: As regards those who study, will someone who studies more achieve a high post or will someone who studies less achieve a high post? Some also become peon. They hardly pass the eighth standard or High school. Some become big officers like IPS (Indian Police Service), IAS (Indian Administrative Service). They can become (officers) only when they do their higher studies.

जिज्ञासुः कुछ लोग ऐसे होते हैं कुछ पढ़ाई-लिखाई नहीं करते हैं पर उससे ज्यादा कमाते हैं। उनसे मान-मर्तबा भी ज्यादा लेते हैं।

बाबा: वो कौड़ियों की कमाई की बात है। ईश्वरीय पढ़ाई की बात नहीं है। यहाँ तो हिसाब बना हुआ है, वहाँ तो पूर्व जन्मों का हिसाब मिलता है। क्या? कोई इस जन्म में कोई मेहनत नहीं करता और बाप दादे की कमाई हुई मिल्कियत उनको मिल जाती है। पूर्व जन्मों का हिसाब-किताब है तो उनको मिल जाती है और यहाँ तो? यहाँ तो जो जितनी पढ़ाई पढ़ेंगे, ब्राह्मण

जीवन में चाहे भले पूर्व जन्म में पढ़ी हो लेकिन 2-3 जन्म से ज्यादा तो ब्राह्मण जन्म होता ही नहीं। उनको उतना मर्तबा मिलेगा।

Student: There are some people, who do not study anything, but they earn more than them (those who study more).They also receive more honor and position as compared to them.

Baba: That is about earning shells (*cowri*) (money). It is not about the Godly knowledge. Here, we have a system; there, (in the outside world) we attain the fruits according to the past births. What? There are some who do not do any work hard in this birth and they obtain the property earned by their father and grandfather. If there is a karmic account of the past births, they obtain it, and here? Here, whoever studies to whatever extent in the Brahmin life, …although they have studied in the past birth; one cannot take more than 2-3 Brahmin births (in the Confluence Age). They will attain a position to that extent.

समयः 04.32-05.55

जिज्ञासुः बाबा, देवकी तो कृष्ण को जन्म दिया। परन्तु यशोदा ने उनको पाला। ये पालन देना अच्छा होता है या जन्म देना?

बाबा: जन्म तो आजकल बहुत दे देते हैं, बड़ा आराम है जन्म देने में। पालना करने में ज्यादा कठिनाई होती है या जन्म देने में कठिनाई होती है? पालन करने में कठिनाई होती है। सम्बन्ध जोड़ना तो बड़ा आसान है लेकिन सम्बन्ध को निभाना? इसी में नम्बर बनते हैं। तो सम्बन्ध जुड़ गया। पति-पत्नी का सम्बन्ध जुड़ा तो निश्चित है बच्चा भी होगा। बच्चे का सम्बन्ध भी जुडेगा। लेकिन सम्बन्ध तो जोड़ लिया फिर उसको आदि से अंत तक निभाना भी तो है। नहीं निभाते हैं तो विधर्मी बन जाते हैं। पालना नहीं कर पाते हैं बच्चे की। तो बच्चा फिर उनको रिगार्ड देता है बडे होकर? हं? कर्ण बच्चा पैदा हुआ, उसकी बुद्धि में रिगार्ड रहा माँ-बाप के लिये? नहीं रहा।

Time: 04.32-05.55

Student: Baba, *Devki* gave birth to Krishna, but *Yashoda* brought him up. Is it better to give sustenance or to give birth?

Baba: Now-a-days many people give birth; giving birth is very easy. Is it more difficult to give sustenance or to give birth? Giving sustenance is difficult. It is very easy to establish a relationship, but what about maintaining the relationship? The number (i.e. rank) is fixed only on this basis. So, a relationship was established. When the relationship of a husband and a wife was established, then it is certain that a child will also be born. The relationship of a child will also be established. A relationship was established; then it should also be maintained from the beginning to the end. If they do not maintain it, they become *vidharmi* (those who have beliefs and practices opposite to that set by the Father). They are unable to take care of the child. Then, does the child give them regard after growing up? Hum? The child *Karna* (a character in the epic Mahabharat) was born; did he have regard in his intellect for his parents (who gave birth to him)? He did not.

समयः 07.10-09.10

जिज्ञासुः बाबा, हमारे अन्दर सिक्स्थ सेन्स (6th sense) कब आयेगा बाबा?

बाबाः क्या आयेगा?

जिज्ञासुः सिक्स्थ सेन्स (6th sense) माना जो कुछ भी होने वाला है वो पुराने जमाने में ऋषि-मुनि जो भी होता है.....

बाबाः वो तो जो चिड़ियाँ होती है ना, जब आंधी आने वाली होती है तो चिड़ियों को पहले से पता लग जाता है कि आंधी आने वाली है और वो अपना रास्ता पकड़ लेती है। क्या? क्योंकि वो कपट बुद्धि नहीं होती है। जो जितना सहज स्वभाव वाला होता है, जितना सात्विक् बुद्धि होती है तो उनको पहले से पता लगता है।

Time: 07.10-09.10

Student: Baba, when will we develop the sixth sense Baba?

Baba: What will you develop?

Student: The sixth sense, i.e. (feeling of) whatever is going to happen (in future), the sages and saints in the ancient times....

Baba: When a storm is about to come, the birds develop a feeling well before, that a storm is about to come and they choose their path (to safety). What? It is because they do not have a deceitful intellect. The more someone has an easy nature, the more someone has a true *(satwik)* intellect, they develop a feeling well before.

जिज्ञासुः सभी जानवरों को पता चल जाता है।

बाबाः हाँ, जानवरों को भी पता चलता है। मनुष्य के मुकाबले जानवर तो बहुत कम कपट बुद्धि है। छल-छिद्र, कपट होता ही नहीं। मनुष्य ज्यादा नीचे भी गिरता है और ज्यादा ऊँचा भी उठता है। पुरुषार्थ करते-करते मनुष्य आत्मा इतनी ऊँची उठती है कि सब पता पडेगा आगे चलके कि क्या होने वाला है। इतनी सात्विक बुद्धि हो जावेगी कि मोबाईल की दरकार ही नहीं पडेगी। दूर बैठे ही बात करते रहो।

Student: All the animals develop a feeling.

Baba: Yes, the animals also develop a feeling. When compared to the human beings, animals have a lesser deceitful intellect. They do not have any feeling of deception and wickedness at all. A human being falls to greater depths as well as rises to greater heights. While making special effort for the soul *(purusharth)*, a human soul rises so high that he will come to know everything; in future [he will come to know] regarding what is going to happen. The intellect will become so true that there will not be any need for mobile at all. You can talk while sitting far away.

……..……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.